ये ना तुले पैसे में...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

श्रृंखला की इस कड़ी में एक परिवार की कहानी के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों व विभिन्न इँको परितंत्रों द्वारा प्रदान की जा रही ऐसी सुविधाओं को समझने की कोशिश की गई है जिनका आर्थिक मूल्य पैसे से तालना असम्भव है।

पात्रः

एंकर

दिनेश

सुनील

प्रदीप

उमाकान्त

शर्माजी

(सुबह का समय दर्शाती कुछ आवाजें। कुछ लोगों के बोलने और हंसने की आवाजें आ रही हैं)

दिनेश– अरे...टीवी की आवाज तेज करो...अपना सुनील आ रहा है...

(टीवी की आवाज तेज होती है और टीवी एंकर की तेज आवाज़...)

एंकर– तो सुनील शर्मा या कहें द सुनील शर्मा...जिन्होंने पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया है। सुनील जी हमारे कार्यक्रम में आपका बहुत–बहुत स्वागत है...

सुनील– जी धन्यवाद...

एंकर– वाह दस साल अमरिका में रहने के बाद भी आपकी हिन्दी बहुत बढ़िया है। तो सुनील जी आपको बिज़नेसमैन ऑफ द ईयर से नवाज़ा गया है. ..कैसा लग रहा है आपको...

सुनील– जी बहुत अच्छा लग रहा है आप सभी का साथ रहा और बेहद अच्छी टीम रही...मैं अपने सभी साथियों को इस पुरस्कार का अधिकारी मानता हूं...सभी का धन्यवाद।

एंकर– आपकी कंपनी आईटी से लेकर खनन, खनिज, रियल एस्टेट...लगभग सभी बड़े कारोबार का हिस्सा है और अब आप एज्युकेशन यानी शिक्षा के व्यवसाय में भी आ रहे हैं, क्या कहना चाहेंगे?

सुनील– देखिए शिक्षा का व्यवसाय नहीं होता है और जो हो गया है उसे ही खत्म करने के लिए मैं इस क्षेत्र में आया हूं और हां ये मेरा अपना प्रोजेक्ट है इसम किसी कंपनी का कोई इंवेस्टमेंट...निवेश नहीं है...

(टीवी की आवाज़ कम हो जाती है और मुख्य पात्रों की आवाज आती है)

दिनेश– अरे शर्मा जी आपके लड़के सुनील ने तो कमाल ही कर दिया है...

प्रदीप– हां दिनेश सही कहा जब छोटा था तो हमेशा पढ़ाई में अव्वल और आज एक बेहद सफल कारोबारी...और अब अपनी तरह औरों के बच्चों को भी शिक्षित करेगा...

उमाकांत– ठीक कह रहे हो प्रदीप जब उसने आईआईटी में टॉप किया था तब शर्मा जी ने अपने पुराने बंगले में क्या बढ़िया पार्टी दी थी...मुझे आज तक याद है...

दिनेश– अरे उमाकांत तुम्हे क्या हम सभी को याद है और आज भी हमारा आना सुनील को अमरिका में मिले बिज़नेसमैन ऑफ द ईयर पुरस्कार के जश्न में ही तो आना है...क्यों शर्मा जी?

(शर्मा जी जैसे कुछ सोचते हुए कह रहे हैं)

शर्मा जी– अं..हां...हां दिनेश इसीलिए तो तुम सभी के साथ जश्न मना रहा हूं।

प्रदीप– पर शर्मा जी आप का चेहरा कुछ और ही कहानी कह रहा है। आप पूरी जिन्दगी शिक्षक ही रहे अब बेटा भी इस क्षेत्र में आ रहा है। क्या आप खुश नहीं हैं?

शर्मा जी– नहीं प्रदीप ऐसी बात नहीं है। मैं अपने बेटे की तरक्की से बहुत खुश हूं लेकिन...शायद अपनी शिक्षा से नहीं।।।

दिनेश— क्या कह रहे हो भाईसाहब?...आपकी शिक्षा से ही तो अपना सुनील इस मुकाम पर पहुंचा है और कितने ही बच्चे आज देशभर में बड़े सरकारी पदों पर हैं अपकी शिक्षा के ही कारण तो?

उमाकांत— ठीक कहा दिनेश।

शर्मा जी— नहीं मेरी शिक्षा के कारण वो बड़े पदों पर नहीं है बल्कि अपनी काबिलियत के कारण और मौजूदा वक्त में बने सिस्टम के कारण हैं।

प्रदीप— पर आपका योगदान तो है ही फिर क्यों अपनी शिक्षा पर सवाल उठाना?

शर्मा जी— मेरे पिता एक स्कूल टीचर थे और तब गांव के हर स्कूल के साथ दो—चार एकड़ जमीन भी होती थी जिसपर हम खेती करके प्रकृति से प्यार करना सीखे थे...

दिनेश— हां, शर्मा जी ये तो हमें भी याद है...

शर्मा जी— लेकिन दिनेश अब गांव में तो ये सब बचा नहीं और थोड़ा बहुत कहीं है तो किसी को परवाह नहीं...

प्रदीप— शर्मा जी आप कहना क्या चाह रहे हैं...अब बढ़ती आबादी की जरुरतें पूरी करने के लिए जमीन पर निर्माण होते ही रहते हैं...

उमाकांत— ठीक कहा प्रदीप और हम आज रिकॉर्ड अन्न उत्पादन पर भी हैं। भई शर्मा जी प्रकृति ने तो हर हाल में हमारा साथ दिया है

शर्मा जी— उमाकांत, प्रकृति को हमने हमेश पैसों में तौला है यानी प्रकृति, हमारे प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक मूल्य क्या होगा बस इसी के आसपास सभी कारोबार गढ़े और खड़े किए गए हं...

प्रदीप— पर शर्मा जी जो प्रकृति की देन है वो सबसे होशियार प्राणी मानव के काम तो आनी ही चाहिए...

शर्मा जी— बस प्रदीप, यहीं तो मेरी शिक्षा फेल हो गई। क्या प्रकृति का महत्व सिर्फ आर्थिक दृष्टि से ही नापा जा सकता है?

दिनेश— पर शर्मा जी आज के परिदृष्य में देखें तो प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर ही दुनिया का अर्थतंत्र टिका है...

उमाकांत– सही कहा दिनेश...और शर्मा जी मानव के पास ज्ञान है और वो इन प्राकृतिक संसाधनों का अपनी सुविधाओं के लिए उपयोग करना जानता है तो क्या गलत है?

शर्मा जो– उमाकांत...सिर्फ इसी सोच ने कि प्रकृति तो हमारी सेवा के लिए है और हम सबसे ज्ञानी है इसलिए हम प्रकृति का अपने अनुसार उपभोग करेंगे. ..सिर्फ इसी सोच ने आज ये हालत कर दी है कि सीओटू का स्तर 410 पीपीएम तक पहुंच गया है।

दिनेश– हां...वैसे ये बात तो शर्मा जी सही कह रहे हैं कि कार्बनडाइऑक्साइड गैस का स्तर पिछले करीब दो करोड़ वर्ष से भी अधिक हो सकता है...

प्रदीप– दिनेश, दो करोड़ वर्ष से भी अधिक भई से तो बड़ी समस्या हो सकती है। पर कारण क्या है?

शर्मा जी– प्रदीप जब से उसी कारण की बात ही तो कह रहा हूं। मानव का लालच, प्रकृति को अपनी बपौती समझकर उसके अंधाधुंध दोहन में लगा है। उसे सिर्फ पैसे के अलावा प्रकृति का कोई महत्व ही नहीं समझ आता।

उमाकांत– पर शर्मा जी क्या प्रकृति का कोई गैर–आर्थिक रूप भी है?

प्रदीप– उमाकांत...बस यही मैं भी पूछने वाला था। शर्मा जी अब प्रकृति ने पट्रोल बनाया तो उपयोग या कहें उपभोग तो मानव ही करेगा ना या फिर बंदर या भालू से उम्मीद है कुछ!!!

(जोर से हंसी)

शर्मा जी– वैसे प्रदीप तुमने बात अच्छी उठाई...ये भालू–वालू इनका कुछ महत्व भी है हमारे जीवन में या सिर्फ तमाशे के लिए ही हैं। चलो एक बात पूछता हूं क्या तुमने की–स्टोन स्पीशीज़ के विषय में सुना है।

प्रदीप– की– स्टोन स्पीशीज...हूं...की–स्टोन यानी मुख्य शीला या कहें कुंजी शीला या प्रमुख पत्थर...हूं...नहीं शर्मा जी कभी की–स्टोन स्पीशीज या प्रजाति के बारे में नहीं सुना।

उमाकांत– प्रदीप में टाइम इतना लगाया कि मुझे लगा की पत्रकार महोदय ने कभी कोई पर्यावरण की किताब पढ़ी होगी, लेकिन नहीं वो मेरी उम्मीदों पर बिल्कुल खरे ही उतरे...

(हंसी)

दिनेश– सही कहा उमाकांत...अं...वैसे शर्मा जी की–स्टोन स्पीशीज का मतलब भी बता दीजिए।

शर्मा जी– दिनेश...मोटा–मोटी समझाऊं तो की–स्टोन स्पीशीज उन जीवों या पौधों की प्रजातियों को कहते हैं जो पूरे पारितंत्र के कार्य करने के तरीके में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रदीप– जी शर्मा जी...अं...जैसे...

दिनेश– प्रदीप तुम नहीं भी बोलते तो भी शर्मा जी उदाहरण देकर समझाते, थोड़ा सब्र करो। जी शर्मा जी बताइए...

शर्मा जी– हां दिनेश...तो इन की–स्टोन स्पीशीज के ना होने पर पूरा पारितंत्र ही खत्म हो जाएगा...

उमाकांत– हैं...इतनी महत्वपूर्ण हैं ये की–स्टोन प्रजातियां

शर्मा जी– हां उमाकांत...देखा एक पारितंत्र में मौजूद सभी प्रजातियां आपस में निर्भर होती हैं...इन प्रजातियों में एक ऐसी प्रजाति होती है जिसके हिलते ही पूरा पारितंत्र ही ढह जाता है...

प्रदीप– शर्मा जी उदाहरण...

दिनेश– प्रदीप नहीं मानेगा...

(हंसी)

शर्मा जी– उदाहरण तो कई हैं जैसे उत्तरी अमरिका के सोनोरॉन रेगिस्तान में कई प्रकार के कैक्टस यानी नागफनी के पौधें होते हैं जिनका सबसे छोटी चिड़िया हमिंगबर्ड परागण करती है...

उमाकांत– लो मुझे तो पता ही नहीं था कि हमिंगबर्ड भी कुछ महत्व की है...

शर्मा जी— उमाकांत, अब इसी सोनोरॉन रगिस्तान में हमिंगबर्ड कम बची हैं, तो बैफलग्रास नामक एक बाहरी धास की प्रजाति ने पूरे पारितंत्र पर कब्जा जमा लिया है और वहां की स्थानीय कई प्रजातियां विलुप्त ही हो गईं...

प्रदीप— हैं...इतना नुकसान...

शर्मा जी— असल में 1969 में एक अमरिकी जीवविज्ञानी प्रोफेसर राबर्ट टी. पेन ने स्टार फीश मछली की एक प्रजाति पिसास्टर ओक्रेशियस को समुद्र के एक हिस्से से निकाला तो सिर्फ 25 वर्ष में शंबुक या सीपियों की एक प्रजाति पूरे क्षेत्र में फैल गई और करीब दस रीढ़विहीन जीवों की प्रजातियां विलुप्त हो गईं...

दिनेश— शर्मा जी ये प्रोफेसर पेन ने बहुत नुकसान किया...

शर्मा जी— नहीं दिनेश...प्रोफेसर पेन ने ही की–स्टोन स्पीशीज शब्द गढ़ा और दुनिया को प्रकृति के इस नाजुक संतुलन से अवगत कराया...क्योंकि सभी तो प्रकृति को सिर्फ उपभोग की वस्तु मान रहे थे लेकिन जितना हम जानते हैं उससे कहो अधिक प्रकृति हमें बिना कुछ लिए ही देती है...

प्रदीप— हां जैसे भालू दिया...

शर्मा जी— प्रदीप भालू तो बहुत ही महत्वपूर्ण की–स्टोन प्रजाति है। उत्तरी अमरिका में पाया जाने वाला ग्रिजली भालू तो बेहद खास है क्योंकि एक सामन मछली को पकड़ता है और पूरे जंगल मं उसके पोषक तत्वों को पहुंचाता है और इसके मल में बेरी फल के बीज भी होते हैं वो भी इस भालू के साथ पूरे जंगल में बिखर जाते हैं...

प्रदीप— ओहो...तो ग्रिजली भालू खत्म तो जंगल खत्म...

दिनेश— हां प्रदीप...लेकिन सिर्फ जंगल ही खत्म नहीं...जंगल खत्म तो जीवन खत्म...

उमाकांत— शर्मा जी और ऐसे गैर–आर्थिक परंतु जीवनदायीनी उपकार प्रकृति के क्या हैं...

शर्मा जी– अरे सबसे बड़ी बात तो ऑक्सीजन जो हमें जीवन देती है उसे क्या तुम पैसों में तोल सकते हो। ये पेड़, पौधे, शैवाल आदि मिलकर पूरे ग्रह के प्राणियों के लिए ऑक्सीजन उपलब्ध कराते हैं ये क्या कम है...

प्रदीप– वैसे हमारे पिता जी को तो ऑक्सीजन एक मशीन ऑक्सीजन कंसंट्रेटर से मिलती थी। पिता जी को फेफडों की तकलीफ थी ना।

दिनेश– प्रदीप...ठीक कहा पर मशीन चलाने के लिए बिजली और मशीन खरीदने के लिए भी पैसों की आवश्यकता है...जबकि प्रकृति ये काम मुफ्त करती है...

उमाकांत– वैसे इस ऑक्सीजन कंसंट्रेटर की कीमत और बिजली का खर्च पूरे आदमी के जीवनकाल के लिए लगा लिया जाए तो इतना पैसा खर्च होगा कि कई पुश्तें कर्जे में आ जाएंगी...

दिनेश– और इतने फल, इतने प्रकार के अनाज, ये सब प्रकृति ने अपनी प्रयोगशाला में बिना किसी खर्च के मुफ्त में हमें बनाकर दिए हैं। मानव तो इतनी तरक्की कर चुका है लेकिन आज तक इतनी जैवविविधता बनाना तो दूर जो है उसे नष्ट करने में जरुर लगा है...

प्रदीप– (कुछ दबी आवाज में) वैसे आजकल प्रयोगशाला में मांस बनाने की बात चल तो रही है...

उमाकांत– अरे प्रदीप करीब सवा करोड़ रुपये का मीट का बर्गर पड़ेगा...लो खिला लो...और अगर आगे चलकर सस्ता हो भी गया तो भी गुणवत्ता क्या है और कितना नुकसान ये पता चलते–चलते तो कई मानव खेत हो चुकंगे।

(हंसी)

शर्मा जी– ठीक कहा उमाकांत...पर सोचो ये शहरी भीड़भाड से दूर तुम कहा जाना पसंद करते हो...कंक्रीट के जंगलों में या फिर सुकून की सांस लेने प्रकृति की गोद में...और पहाड़ों के दिलकश नजारों, जंगलों की ठंड़ी ब्यारों के लिए प्रकृति कोई पैसे नहीं वसूलती...

दिनेश– हां कुछ आदमी इन अच्छे प्राकृतिक नजारों के पैसे जरुर वसूलने लगे हैं...

(हंसी)

शर्मा जी– बड़ी टेक्नोलॉजी बना ली आज तक ओजोन की परत को बना नहीं पाए...तरक्की करेंगे...ऑक्सीजन चक के क्या प्रकृति पैसे लेती है...हां शहर का कूड़ा उठाने की कीमत जरुर देनी पड़ती है...

प्रदीप– वैसे प्रकृति के उपकारों को पैसों में नहीं तौला जा सकता पर शर्मा जी आज जीवन फिर से जंगलों में जाकर तो नहीं बिताया जा सकता... विकास भी प्रकृति का सिद्धांत है...

शर्मा जी– प्रदीप सही कहा...लेकिन विकास तो निरंतर प्रकिया है लेकिन हम विकास और विनाश के फर्क तो समझें...पूरी दुनिया में एक युद्ध छिड़ा हुआ है कुछ प्रत्यक्ष है और कुछ अप्रत्यक्ष...तो इसका कारण क्या है?

दिनेश– कई कारण है वैसे आर्थिक कारण अधिक नजर आते हैं...

शर्मा जी– सही दिनेश...आर्थिक और हम कह रहे थे मानव सभ्यता ने विकास कर लिया है, पर कैसा विकास जब आधी से अधिक दुनिया भारी विषमताओं में जीवन जी रही है और कुछ लोगों के पास सबकुछ...

उमाकांत– यानी कुछ लोगों के लिए विकास है...वैसे कहा जा रहा है कि दुनिया के करीब 80 फीसदी प्राकृतिक संसाधनों का लाभ दुनिया के कुछ एक फीसदी लोगों को ही होता है।

शर्मा जी– बस यहीं बात शिक्षा की आ जाती है, प्रकृति ने सिर्फ देना सिखा है और मानव से सिर्फ अपने लालच के लिए बटोरना और ये ही शिकायत है मुझे अपने पढ़ाए बच्चों से अपने लिए तो बहुत कुछ पर इस धरती के लिए क्या किया?

प्रदीप– शर्मा जी आपकी बात कुछ समझ तो आ रही है, इस धरती, प्रकृति के उपकारों का कोई मोल नहीं हैं, हवा, मिट्‌टी, पानी इस जीवन के ये आधार तो प्रकृति की ही देन हैं। आदमी तो इन आधारों की ही चूलें हिला रहा है।

उमाकांत– ठीक कहा प्रदीप...पर शर्मा जी प्रकृति से जुड़कर...प्रकृति के साथ जीने की शिक्षा कभी बेकार नहीं जाती...

(अचानक से दिनेश चिल्लकर बोलता है)

दिनेश– अरे अपने सुनील ने अपनी कंपनी से इस्तिफा दे दिया...

शर्मा जी– क्या कह रहे हो दिनेश?

दिनेश– अरे अभी–अभी मोबाइन पर ब्रेकिंग खबर चली है। अरे प्रदीप जरा टीवी ऑन करो...

(टीवी पर एंकर की आवाज...)

एंकर– सूत्रों से प्राप्त खबरों से हाल ही में बिजनेस ऑफ द ईयर का अमरिका में खिताब पाने वाले प्रसिद्ध कारोबारी सुनील शर्मा ने कंपनी से इस्तिफा दे दिया है और वे तत्काल प्रभाव से अपनी सभी जिम्मेवारियों से मुक्त हो रहे हैं।

शर्मा जी– अरे ये क्या किया? अरे राजू मेरा फोन तो लाना...

(तभी फोन की घंटी की आवाज)

राजू– साहब सुनील भइया का फोन है...

शर्मा जी– हां खुश रहो...ये क्या सुन रहे हैं...हूं...अं...पर...अच्छा तुम्हारी मां भी आ रहीं है...अच्छा...सभी...चलो...खुश रहो...

(फोन कटने की आवाज)

दिनेश– क्या बात है शर्मा जी...क्या कहा सुनील ने...

शर्मा जी– कुछ नहीं...कहा रहा था कि रविवार को आ रहा हूं पूरे परिवार के साथ...अब यहीं रहूंगा।

प्रदीप– अरे इतनी बढ़िया नौकरी भी कोई छोड़ता है क्या?

शर्मा जी– ये आजकल के बच्चे भी, चलो तीन दिन में आ रहे हैं तभी बात करते हैं।

(दृश्य परिवर्तन का संगीत।

घंटी बजने की आवाज...)

दिनेश– अरे राजू, सुनील आ गया क्या?

राजू– हां साहब अभी–अभी आए हैं। बस थोड़ी डांट खा रहे हैं, आइए आप लाग आइए

(शर्मा जी ऊंची आवाज में बोलते हुए)

शर्मा जी– तुम्हारे लिए मैने हर तरह का त्याग किया है, बहुत ऊंचे सपने देखे थे तुम्हारे लिए और आज पता नहीं किस सनक में तुमने दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी को छोड़ दिया। लो आओ दिनेश, बैठो प्रदीप उमाकांत आओ, लो देखो द सुनील शर्मा को...

सुनील– नमस्ते अंकल...

शर्मा जी– (गुस्से से) अरे बेटा तुम्हे अपनी मां को तो सोचना चाहिए था...पूरी जिंदगी जो सिर्फ तुम्हारी खुशी के लिए कामना करती रही, जिसने खुद गीले में सोकर तुम्हे सुख पहुंचाया और आज जब तुम्हारी बारो सुख देने की थी तुम सब सुख छोड़कर यहां चले आए...

दिनेश– अरे शांत शर्मा जी, शांत...बेटे को थोड़ा आराम तो कर लेने दीजिए... बैठो बेटा...आओ...आओ...

सुनील– नहीं अंकल ठीक है और पिताजी को बोलने दीजिए, उन्हे तो हक है। वैसे पिताजी मैंने सब कुछ छोड़ दिया, सारे ऐशो–आराम छोड़ दिए... किसके लिए पिताजी?

शर्मा जी– किसके लिए...अपनी किसी सनक के लिए (गुस्से से)

मां– अरे, उसकी सुन तो लो...

सुनील– हां पिताजी, सनक अपने बच्चों के लिए, सनक आप के लिए, सनक अपनी मां के लिए...सनक अपने धरती के लिए अपनी प्रकृति के लिए...

प्रदीप– क्या कह रहे हो बेटा...

सुनील– ठीक कह रहा हूं, प्रदीप अंकल...मैने बहुत पैसा कमाया पर शायद चैन और सुख के लिए भटकता रहा। मैने धरती को खोदकर तेल निकाला, उसमें जख्म करके कोयला निकाला, जंगलों काटकर एयर प्यूरिफायर भी बेचा...पर शायद अपने लिए, अपने लालच के लिए...

शर्मा जी– (रुआंसे स्वर में) क्या कह रहे हो बेटा...

सुनील– हां पिताजी इस धरती ने...इस प्रकृति ने हम पर कई उपकार किए है और हमने प्रकृति की हर नियामत को पैसों से तौला है और आज ये प्रकृति हमसे सिर्फ साथ चाह रही है, अपने लिए नहीं बल्कि हमारे अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए...

उमाकांत– वाह सुनील वाह...

सुनील– हां उमाकांत अंकल, अगर आज हमने अपनी आर्थिक उन्नति के लिए प्रकृति को निर्धन बनाने का कर्म जारी रखा तो ये प्रकृति सब तबाह कर देगी और फिर से नई रचना करेगी...लेकिन फिर उसमें हम ना होंगे...हां जीवन किसी और रूप में जरुर होगा...

शर्मा जी– शाबास सुनील, मैं थोड़ी देर के लिए अपने ही लालच में कुछ भटक गया था और अपनी ही कही बातों को भूल गया था...शाबास बेटे तूने मेरी शिक्षी की लाज रख ली...तुने मेरी शिक्षा को लाज रखली...

प्रदीप– हां सुनील, तुमने हम सबकी आंखे खोल दी और शर्मा जी आपने सही कहा था कि ये प्रकृति ना तुले...

सब एक साथ– पैसे में...

(हंसी के साथ समाप्त)

***